136 P
554
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1367/1978
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 554

Prem
19-1

891.431
Sh23M

183
509

मजलूमों की आह

यानी

दुखी हिन्दोस्तान

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

शेरो उठो तय्यार होवो अब बारी हमारी आ पहुंची
पटेलजी भी गये जेल में और बुलबुले हिंद भी जा पहुंची

संग्रहकर्त्ता
द्वारकाप्रसाद शर्म्मा नरेला निवासी

प्रकाशक
राम रिछपाल अवधूत

भारतचन्द्र प्रेस देहली. में छपा

प्रथम बार १००० मूल्य -)

सामान का
[illegible]

स्वर्ग वासिनी जननी।

जय जय स्वर्ग वासिनी जननी, तेरे गुन मैं गाता हूं।
तेरी पवित्र पाक रूह को, अपना शीश झुकाता हूं॥
अमृत सा क्षीर पीया तेरा, ऐ प्यारी अन्नदाता मेरी।
ताकत इतनी नहीं ज़बां में करूं जो मैं तारीफ तेरी॥
तेरे प्यारे चित्र को देख के शान्त रूप हो जाता हूं।
तेरी पवित्र पाक रूह को, अपना शीश झुकाता हूं॥
तू प्रेम ईश्वर से करती थी, और झूठा नाता तोड़ा था।
माया मोह से दिल को हटा कर, पारब्रह्म में जोड़ा था॥
करती थी खुद ध्यान प्रभु का, औरों को ज्ञान सिखाती तू।
तेरी पवित्र पाक रूह को, अपना शीश झुकाता हूं॥
धैर्य रूपी धनुष बनाया ज्ञान के तीर से तान लिया।
काम क्रोध मद लोभ को मारा, मन को नर समान किया॥
तीन साल का छोड के मुझ को, स्वर्ग में जाय सिधारी तू।
तेरी पवित्र पाक रूह को, अपना शीश झुकाता हूं॥
अज्ञान अबोध बालक हूं, आखिर तो हूं पुत्र तेरा।
पहुंचे तुझे शान्ति सदा, वह काम करूँ माता मेरी॥
नेक कमाई करू सदा, यही वर दो तेरे दर आता हूं।
तेरी पवित्र पाक रूह को, अपना शीश झुकाता हूं॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 554
Date
GOVT OF INDIA

गजल

(तर्ज--आजा २ ओ कृष्ण प्यारे आजा)

भार पृथ्वी का मेरे लाल हटाना होगा ।
राम और कृष्ण तुझे बनके दिखाना होगा ॥

नाव जो देश की यह डूबती मझधार में ।
बनके मल्लाह तुझे इसको बचाना होगा ॥

दल दुष्टों का जो बढ रहा भारत में ।
ताकत से अपनी इनको मार भगाना होगा ॥

देश के लाल तेरे गीदड बने हुवे हैं ।
इनकी शौकत का इन्हें याद दिलाना होगा ॥

सो रहे हैं ख्वाबे गफलत की नींद में यह ।
शाने हिलाके अपनी इनको जगाना होगा ॥

देश के मासूम बच्चे भूखे मर रहे हैं ।
इनके लिये अपने जर को लुटाना होगा ॥

देश का वृक्ष है इस वक्त बहुत कुम्हलाया ।
खूने दिल से इसको सरसब्ज कराना होगा ॥

इसी दिन के लिये जना है तुझे तेरी जननी ने ।
देश के ऊपर अपने सर को कटाना होगा ॥

मानिंद आफताब तू चमकना ए मेरे बच्चे ।
जननी के क्षीर को अब ताबदार दिखाना होगा ॥

माँ बाप का नाम सदा दुनियाँ में रोशन करना ।
नाम उनके को कहीं धब्बा न लगाना होगा ॥

एक राष्ट्रीय कैदी की उमंगें ।

वह वक्त जल्दी आये तो मैं जाऊं धर्म दरबार में ।
सर को अपने वार डालूं खुशी से माँ के प्यार में ॥
वह शाँति आयेगी मुझको, उस तीर्थ में पहुंच कर ।
जो कभी आती नहीं, गंगा की निर्मल धार में ॥
दर्शन होंगे धर्म की, मूर्तियों के वहाँ मुझे ।
जो कभी होते न शायद, मथुरा-प्रयाग-हरद्वार में ॥
फूल चढ़ाऊंगा सदा महात्मा के चरण पर ।
जिनके चरणों का सानी है नहीं संसार में ॥
हथेली पै रक्खा सर को 'द्वारा' मौत की परवाह है क्या ।
देखना है ज़ोर कितना ज़ुल्म की तलवार में ॥

मुबारिकबाद ।

ख़ातिर वतन की तेरा बुलबुले हिंद ।
अब जेलख़ाने में जाना मुबारिक ॥
आफतें झेलते थे मुद्दत से भाई ।
तुम्हें हाथ उनका बटाना मुबारिक ॥
दीवियों के भी ज़ुल्म और सितम का ।
यह वक्त जल्दी ही आना मुबारिक ॥
ले आवो खंजर करो कत्ल हमको ।
हमें देश पर सर कटाना मुबारिक ॥
"द्वारा" भी जाने को तैयार है अब ।
इसे जल्द हो जेलखाना मुबारिक ॥

गजल

(तर्ज-वह पहला जाहो जलाल तेरा)

दिखा दो दुष्टों को धर्म भाइयो।
हम क्या हैं और क्या दिखा चुके हैं॥
धर्मी पुरुष धर्म के ऊपर।
लहू को अपने बहा चुके हैं॥
कैद में दुख सहे जवाहर अकेला।
न धर्म छोड़ा बहुत दुख झेला॥
पापी को पापों की सजा दिला कर।
देश भारत को जगा चुके हैं॥
द्रोपदी विराट के घर रही चेरी।
सो दुष्ट कीचक ने आन घेरी॥
अपना अन मोल धर्म भी रक्खा।
पाण्डों मिट्टी में उन को मिला चुके हैं॥
अब देखा कि धर्म जा रहा है।
दल दुष्टों का नजदीक आ रहा है॥
तीनसौ दासी और पदमनी रानी।
खुद को जिंदा जला चुके हैं॥
अब यह हाल रहा देवियों की।

मर्द कहाँ अब सो रहे हैं ॥
है वक्त अब सिर कटाने का।
इन्तज़ार में बहुत खो चुके हैं ॥
चाहे मुसीबतें लाख उठाएं।
"हमारा, धर्म को क्यूं गंवाएँ ॥
भारत माता को खाक पा को।
माथे पै अपनी चढ़ा चुके हैं ॥

गजल

(तर्ज-वक्त इमदाद का है बासुरी वाले आजा)

माताओ बहिनो ज़रा होश में आओ तो सही।
देश की शान चली इसको बचाओ तो सही ॥
भूखे हैं लाल सभी आपकी शिक्षा के।
गोद में अपनी बिठा इनको पढ़ाओ तो सही ॥
शास्त्रार्थ होरहे हैं, देश में अब बहुतेरे।
जीत के जनक से ज्ञानी को दिखाओ तो सही ॥

पापी लुटेरे तो अब होगये पैदा लाखों।
हरिश्चन्द्र से अब उनके दिखाओ तो सही ॥

छोटे छोटों की शादी कर बरबाद किया बहुतेरा।
भीष्म दयानन्द से ब्रह्मचारी बनाओ तो सही ॥

प्यारा भारत तो अब बन गया गैरों का गुलाम।
अपनी विद्या से गुरू सबका बनाओ तो सही ॥

ग़ज़ल

(तर्ज़-ज़ख्मी दिल को न मेरे रुलाया करो)

देश सेवा में मन को लगाया करो ।
कांग्रेस की उन्नति दिलाया करो ॥
कीमती यह वक्त जाता होश जल्दों कीजिये ।
देश भक्ति का है समय कदम आगे दीजिये ॥
प्यारो भक्ति का रंग चढ़ाया करो ।
कांग्रेस की उन्नति दिलाया करो ॥
फंस रहे हैं लालचों में देश का न कुछ ख्याल है ।
सत्यवती व पारवती को कैद किया तत्काल है ॥
अपनी बहनों का ख्याल तो लाया करो ।
काँग्रेस की उन्नति दिलाया करो ॥
जो दिया तुझको प्रभु ने उसमें ही संतोष हो ।
दिली तेरी नोबता और दूर सारे दोष हों ॥
सदा शाँति के राज को पाया करो ।
काँग्रेस की उन्नति दिलाया करो ॥
जमाके आसन तू लगाले अपने रूह ध्यान को ।
दिल के अन्दर देख तू उस सर्व शक्तिमान को ॥
'द्वारा' प्रभू अपने को रिझाया करो ।
काँग्रेस की उन्नति दिलाया करो ॥

गजल

(तर्ज--मुस्कराते जाते हैं कुछ मुंह से फरमाने के बाद)

होश में आवोगे लालो मेरे मरजाने के बाद ।
कागता मेरा जहाँ से हाथ टलजाने के बाद ॥

लेकर विदेशी माल तुम कंगाल मुल्क कर रहे ।
तुम कुली कहलाओगे साहिब कहलाने के बाद ॥

पास जब दौलत तुम्हारे यार और गमख्वार सब ।
कोई भी पूछे नहीं मुफलिस बन जाने के बाद ॥

अब खुशी से पी रहे हो तुम शराबे जाम को ।
नालियों में गिरते फिरोगे नशा चढ जाने के बाद ॥

बे ज़बानों के माँस से तुम पेट अपना भर रहे ।
कब्रिस्ताँ कहलायेगा मुर्दों से भरजाने के बाद ॥

धर्म बनाले अपना साथी जो साथ जावे 'दाग' ।
और तो सब यहीं रहजावें जाँ निकल जाने के बाद ॥

महात्माजी की चिट्ठी

माँ की सेवा की लगन जो इसे भुलायें किस तरह ।
सिहनी पिंजरे में रहकर दिन बितायें किस तरह ॥

माँ मेरी पै है मुसीबत इस वक्त आई बहुत ॥
देख कर यह हाल हाय चैन पाये किस तरह ॥

सत्याग्रही के होके जायें धर्म युद्ध से डरें ।
आजाद माता को कराना भूल जायें किस तरह ॥

इस यज्ञ की वेदी पै बलिदान होवें सबसे पहले वह ।
दिल में है अभिलाषा यही लहू अपना बहायें किस तरह ॥

बस अर्जी यह स्वीकार हो ए देश के महात्मा ।
आपका दर छोड़कर दर और के जायें किस तरह ॥

'द्वारा' है दर का भिखारी आज्ञा को भिक्षा दीजिये ।
दिल का सच्चा हाल महात्मन और को बतायें किस तरह ॥

महिलाओं का वीरता

(तर्ज गजब की बंसी बजा २ कर)

देखियो देश भगिनियों ने क्या कर हमें दिखला दिया है ।
अपने देश के धर्म के ऊपर क्या २ सदमा उठा लिया है ॥

राज महलों में रहें जो प्यारी धर्म की मूरत सत्यवती दुलारी ।
अपने प्यारे देश की खातिर जेल घर अपना बना लिया है ॥

हरिश्चन्द्र की तारा प्यारी दरदर हो फिरती मारी मारी ।
अपने पति के प्रण की खातिर फकीरी बाना बना लिया है ॥

सती सावित्री के सत को देखो उसके तेज और पतिव्रत को देखो ।
तेज धर्म का बढ़ाया इतना, मुर्दा पति को जिला लिया है ॥

दमयन्ति जैसी सुन्दर रानी जगंल की जिस ने खाक छानी ।
अकल से अपना पति बुलाया दुबारा सोम्बर रचा लिया है ॥

दिया एक देवी को शाप ऋषि ने निकलते सूरज पति मरेगा ।
उसने पतिव्रत सत से "द्वारा" सूर्य तक को छिपा लिया है ॥

हुई झाँसी में लक्ष्मी बाई, जिस से अंग्रेजोंने शिकस्त खाई ।
लाज अपना बचाने कारण, घोड़ा अपना भगा दिया है ॥

नया था घोड़ा अड़ा वहीं पर, जल अथाह को देख कर के।
फिर से अड़ी वह बांध हिम्मत प्राण को अपने गवाँ दिया है॥

उमीद रखते हैं "सरोजनी" से और बहिन "सत्यवती" से।
उलट देंगी वह हकुमत का तख्ता रूप विकराल बना लिया है॥

पारवती भी मैदान में आई देके पलान अंग्रेज़ा को।
ठीक कोतवाली के सामने, मोरचा अपना जमा दिया है॥

हार माना जब पुलिस ने, तो फ़ौज अपनी को संग लेकर।
पहुंची शराबपर पिकटिंग करने, टुकड़ा अंगरेज़ोंका छीन लिया है।

टुकड़ा छिनते देख ज़ालिमों ने, झट लिया गिरफ्तार वहांपर।
सच कहा है किसी कवि ने, भूके मरते ने क्या न किया है॥

भूल जायेंगे ज़ुल्म करने जब हम अपनी पर अड़ेंगे।
"द्वारा" अब तो बंधेंगे बिस्तर टिकट इंगलेंड का कटा लिया है॥

वीर चेतावनी।

जागो वीरो उजियाला हो गया।
गवर्नमेंट से तुम्हारा पाला होगया॥
भारत माता पुकारे तुम पर कुर्बान मैं।
भाई तुम्हारे सड़ें हाय जेल में॥
आज उनका हाय मुकद्दर क्या से क्या होगया॥ गवर्नमेंट०॥

सोने की लंका को तमने मिट्टी का घर कहा।
ठोकरें मारीं सुखों पै धर्म अपना ना तजा॥
वह हिंद लालच में फंसकर सरशार होगया॥ गवरमेंट०॥
थोड़ा सा डर देखते हो अब मरे जाते हो।

धन के लालच में आके धर्म गंवाते हो ॥
अपने हाथों से कोई पाप का बीज बोगया ॥ गवरमेंट० ॥

जिसने थे लाखों दुष्टों के छक्के छुडा दिये ।
कृष्णजी ने बगैर लडे सब रण से भगादिये ।
हा कृष्ण के प्यारे हिंद तू मुरदार होगया ॥ गवरमेन्ट० ॥

देख देश की दशा दिल पाश पाश है ।
उवारो इसको वीरो बस यही आस है ॥
यह हालत देख 'द्वारा' भी बीमार होगया ॥ गवरमेन्ट० ॥

गजल

(हिंदू जाति तू अब जाग उजाला होगया)

भारत देश तू जाग अब उजाला होगया ।
तेरे दुश्मन की हिम्मत का दिवाला होगया ॥
भगवान तिलक फिर से गीता को दोहरा गये ।
देशबन्धुदास फर्ज अपना निभा गये ॥
लाजपत तेरा लाज का रखवाला होगया ।
तेरे दुश्मन की हिम्मत का दिवाला होगया ॥
कंगाल कब तू होगया था गैर के व्यापार से ।
गांधीजी ने आ बचाया खद्दर की तार से ॥
इनके चरखे की टेप से सम्भाला होगया ॥
तेरे दुश्मन की हिम्मत का दिवाला होगया ॥
जवाहर से शेर जेल में मुसीबत उठा रहे ।

चक्को चलाते हैं चने कच्चे चबा रहे ॥

आज दुनियाँ में जिनका बोलबाला होगया ।
तेरे दुश्मन की हिम्मत का दिवाला होगया ॥

जंगे आजादी में शेर लाखों हो गये ।
सख्तियां झेलीं सभी जामे शहादत पी गये ॥

बीर पटेल भी तेरा मतवाला हो गया ॥
तेरे दुश्मन की हिम्मत का दिवाला होगया ॥

देवियां भी तेरी खातिर जेलों में अब आरहीं ।
'सतया' झेल आफतें और गोलियां खारहीं ।

कौमी गद्दारों का जग में मुंह काला होगया ।
तेरे दुश्मन की हिम्मत का दिवाला होगया ॥

मता का बेटेको उपदेश

(तर्ज-दिले बेकरार सोजा)

तू प्यारे मेरे बेटे जरा हुशियार होजा ।
करने को देश रक्षा अब तय्यार होजा ॥

देश का यह गुलशन कुमलाय गया है अबतो ।
कर सब्ज हिम्मत करके, मौसिम बहार होजा ॥

मर रहे हैं भूखे तेरे देश के बच्चे ।
कर प्यार तू इनको आर गम गुसार होजा ॥

कट रहे हैं तेरे लाखों घरों रिश्तेदार ।
रक्षा करले अबतो, परवर दिगार होजा ॥

मैदाँ में जाके बेटा' दुश्मन के सामने तू।
खंजर गदा सुदर्शन, तीरो तल्वार होजा॥
देश और जात में अन्धेरा छा रहा है।
करने को अब उजाला, तू आफ़ताब होजा॥
फ़रज़ अपने पूरे करना, जग में ए लाल मेरे।
देश और बिरादरी का खिदमत गुज़ार होजा॥
दुष्टों को सज़ा देने को मुजस्सम तू काल होजा।
"छाग, के प्यारे बच्चे सच्चा तू लाल होजा॥

भारत माता की फ़र्याद

(तर्ज़-तुझे बन्शी मोहन बजानी पड़ेगी ॥

मेरे लाल मुझको भुलाये हुवे हैं।
जो दे दे के लोरी खुलाए हुए हैं॥
मुहब्बत देश से अब रही ना।
यह लज्जत में मन को लगाये हुए हैं॥
ब्रह्मचर्य का तेज न चेहरों पै रौनक।
यह मुर्दों सी शकलें बनाये हुये हैं॥
सुदामा कृष्ण सी मुहब्बत नहीं है।
यह जीने को क्याह बनाये हुवे हैं॥
मुझे लूटते हाय आकर विदेशी।
खड़े यह तो गर्दन झुकाये हुवे हैं॥

तुम हो उनकी औलाद जिन्होंने ये शेरों ।
लाखों के छक्के छुडाये हुवे हैं ॥
अय वीरो करो याद ताकत वह अपनी ।
मुंह क्यों बिलों में छुपाये हुवे हो ॥
आये जो मुशकिल न घबराना 'छारा' ।
प्रभु करने इमदाद आये हुवे हैं ॥

भारत माता से फरयाद

देश पर कुर्बान हो जो प्यारी वह सर पैदा कर ।
धर्म का जिसे दर्द हो, यहाँ वह जिगर पैदा कर ॥
पालें तुम्हारी आज्ञा, चाहे कष्ट लाखों सहें ॥
राम जैसे माता अब तू वो बशर पैदा कर ॥
हिम्मत और जुर्रत बढाये शानकर भारत में जो ।
बंशी वाले कृष्ण से नूरे नजर पैदा कर ॥
धर्म के मैदान में न पीठ दिखलाये कभी ।
भीम अर्जुन की तरह सीना सिपर पैदा कर ॥
मन को रक्खे बश में सत्यव्रत का पालन कर ।
भीष्म और दयानन्द से ब्रह्मचारी नर पैदा कर ॥
जाने कुरबाँ करके अपनी देश करे आजाद जो ।
शिवा और प्रताप से शेरबबर पैदा कर ॥
सर कटायें शौक से पर धर्म न छोडें कभी ।
प्यारे हकीकतराय से लख्ते जिगर पैदा कर ॥

रसिया

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग जंग में पकड़ूंगी तलवार ।

भारत को आजाद करूंगी नहीं जेलसे बालम डरूंगी ॥

मारूंगी और वहीं मरुंगी करूं नमक तैयार ।

प्रीतम चलूं ०

चरखे की मैं तोप बनाऊं बना सूतके गोले चलाऊं ।

मानचेस्टर के किले को ढाऊं पाऊं फतह भरतार ॥

प्रीतम चलूं ०

गांधी जी का हुकम बजाऊं घर घर में उपदेश नाऊं ॥

अपनी बहनों को समझाऊं करूं खूब प्रचार ॥

प्रीतम चलूं ०

नहीं पीछे को कदम हटाऊं नहीं माताका दुध लजाऊं ।

रजपूती का हुनर दिखाऊं कस पांचों हथियार ॥

प्रीतम चलूं ०

अपना पहनू कता सुदेशी नहीं खरीदूं माल विदेशी ।

सुलह करेंगे तब परदेशी हुआ गरम बाजार ॥

प्रीतम चलूं ०

गाढे के सब वस्त्र बनाओ, सारी पब्लिक को पहनाओ ।

और मैं रहूं खूब तयार ॥ प्रीतम ० ॥

गज़ल

(तर्ज़-कहरहे हैं कगिया के कैदी ।)

पारटी अपनी कौमी बनाकर ॥

लेंगे स्वराज सुसराल जाकार ।

अबतो चमका मुकद्दर हमारा ॥

रंज गम दूर होगा हमारा ।

नारा बन्देमातरम लगा कर ॥ लेंगे० ॥

डर नहीं जेलखाने से हम को ।

काम मतलब मुरारी से हम को ॥

जाते हैं जेल खुशियां मनाकर ॥ लेंगे० ॥

जेलखाना है ससुराल का घर ।

घरसे सुसराल के मालको भर ॥

सर पर दुश्मन के डंका बजा कर ॥ लेंगे० ॥

हमतो जाते हैं अब तुम सभालो ।

काले भाई की सुनो ए काखा ॥

गोरा चमड़ा रहेंगे मिटाकर ॥ लेंगे० ॥

जेल खाना है सुसराल सब की ।

उस में जाकर के पीसेंगे चक्की ॥

हुकम गांधी जी का बजाकर ॥ लेंगे० ॥